matter on the basis of a news item published in a newspaper, and 1 assured the House that 1 would seek the necessary information and come back to the House. We have made enquiries from the Rajasthan Government. The Rajasthan Government has informed us that it is not yet clear as to what exactly has happened. But, they have asked Shri Kaiyanmal Sharma, Director (Jails), who is a DIG- level IPS officer, to enquire into the matter. The Rajasthan Government has also informed us that the Hurriyat prisoners, who are detained in the Jodhpur Central Jail, are permitted to meet their relatives or their counsel twice a week. This is the information that the Rajasthan Government has given us. If, after enquiry, the Rajasthan Government gives us any further information, I will certainty share it with the House.

I may inform the House that the Pakistan TV itself had publicised this matter that Gen. Parvez Musharraf had written a letter to the Hurriyat leader expressing concern and complimenting them for the struggle they are waging against the Government of India etc. etc. If, however, any further information is forthcoming, after the inquiry is made by the Rajasthan Government, I will share it with the House. Thank you.

Clarifications on Statement by Minister Re. Accident at Indira Gandhi International Airport on 13th December, 1999

THE DEPUTY CHAIRMAN: A statement was made by the Minister of Civil Aviation. Clarifications could not be sought then. Are you keen to have the clarifications now? Reports about the action taken by the hon. Minster have already appeared in the newspapers. Do you still wish to seek clarifications?

SOMEHON. MEMBERS: Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have got some names. Shrimati Jayuanthi Natarajan, Shri Ramaswamy, Shri Suresh Pachouri, Shri Md. Salim. They are not present in the House. Shri Bratin Sengupta is here in the House.

श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया (**उत्तर प्रदेश**) **:** मैडम, मेरा नाम भी था।

उपसभापति : हां, आपका नाम हैं। जो उपस्थित नहीं हैं, मैंने उनका नाम पढ़ा हैं।

There are many who are present. Shri Santosh Bagrodia.

[THE VICE-CHA1RMAN(SHRI ADHIK SHIRODKAR) in the Chair]

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan); Sir, I would just put straight questions without going into the details of the incident. When exactly did the technician come? I understand, the technician came after the incident. I am not going into the incident क्या हुआ, क्या नहीं हुआ लेकिन जो रिपोर्ट आई हैं उसमें लिखा हैं कि वह टेक्नीशियन बहुत देर से आया। तो वह ठीक कितने बजे आया, यदि माननीय मंत्री जी बता सकें तो बड़ी मेहरबानी होगी। मैं इस रिपोर्ट के बेसिस पर ही पूछ रहा हूं। वैसे ही जो स्टेटमेंट आपने दिया हैं, उसमें लिखा हैं-

"It tooic 28 minutes to release the seven-year old girl and Shrimati Usha Rani Nagpal." Is it considered right in an emergency by the Airports Authority?

इस तरह के एक्सीडेंट में ऐक्शन लेने में 28 मिनट लगाना- एयरपोर्ट अथॉरिटी की तरफ से यह जा ऐक्शन हुआ, क्या मंत्री महोदय यह सोचते हैं कि वह ठीक हुआ? YOU know there is a policeman who sits there. मंत्री महोदय, आप भी जाते हैं और हम लोगों को भी आना-जाना पड़ता हैं। आपने भी देखा होगा कि एस्केलेटर के ठीक नीचे एक पुलिसमैन कुर्सी लगा कर बैठा रहता हैं। आज भी आप जाएंगे तो वह कुर्सी आपको मिलेगी वहां। उस कुर्सी पर बैठ कर वह क्या काम करता हैं? पैसेजरं तो ऊपर से आते हैं, वह नीचे बैठकर करता क्या हैं? किसकी सिक्योरिटी करता हैं- पैसेजर्स की करता हैं या एस्केलेटर की करता हैं या पत्थर की सीढियों की सिक्योरिटी करता है? मुझे तो आज तक समझ में नहीं आया। वह पुलिस वाला उस दिन भी वहां बैठा था, उसने क्या किया? क्या उसको इतनी भी ट्रेनिंग नहीं मिली हैं कि अगर इस तरह का कोई हादसा हो जाए तो लाल बटन दबा देना चाहिए? मैं यह जानना चाहता हूं कि उस पुलिस वाले के वहां बैठने से क्या फायदा हुआ?

महोदय, सारी दुनिया में एक नियम हैं कि जहां से एंट्री होती है, चाहे वह एस्केलेटर ऊपर जा रहा हो या नीचे जा रहा हो, यह तो एक छोटा सा एस्केलेटर हैं करीब 15-20 फुट का। लंदन में तो 60-60 फुट के एस्केलेटर लगे हुए हैं और वहां पर लाखों आदमी रोज उससे ट्रेवल करते हैं, जमीन के नीचे लगे हुए हैं बेसमेंट में। अगर एक एक्सीडेंट होता हैं तो वह ऑटोमेटिकली रूक जाता हैं और लाल बटन दबाने पर भी वह रूक जाता हैं। मैंने खुद देखा हैं एक एक्सीडेंट। यहां आप कहते हैं कि पहली बार ऐसा एक्सीडेंट हुआ हैं, पता नहीं हिंदुस्तान में पहले हुआ हैं या नहीं पर हमारे सामने यह पहली बार आया हैं। मैं ऐसा मान सकता हूं लेकिन मैंने खुद देखा हैं लंदन में एक बा रेल में मैं सफर कर रहा था। वहां

एस्केलेटर में किसी महिला का कोई कपड़ा फंस गया तो वह एस्केलेटर वही रूक गया, ऑटोमेटिकली रूक गया। वहां पर जो आदमी खड़ा होता हैं वह लाल बटन दबा देता हैं। यहां पर तीस मिनट तक लाल बटन दबाना किसी को नही आया? वहां बड़े-बड़े बोर्डों पर क्या लिखा हुआ हैं? पहली बात तो यह हैं कि जब चढ़े तो रेलिंग पकड़कर चढ़े, दूसरी बात बच्चे अगर साथ में हैं तो उनका हाथ पकड़े। आप क्यो नही सिम्पल बातें वहां लिखवाते? वहां कोई बोर्ड नहीं लगा हुआ हैं। न ऊपर लगा हैं, न नीचे लगा हैं। जिसकी जान चली गई वह तो चली गई लेकिन कम से कम आगे के लिए तो यह काम हो जाए, बोर्ड वगैरह लग जाए क्योंकि लो लोग आते हैं वे सभी बहुत ज्यादा समझदार हों, ऐसी बात नहीं हैं। कम से कम एक इन्फोर्मेशन देनी चाहिए। यह किसकी जिम्मेदारी हैं? क्या ओटिस वालों की? उनकी भी जिम्मेदारी हैं। इंटरनेशनल कंपनी वाले के लिए ऐसा नहीं हैं कि वे गलती नहीं करते या उनके ऑफीसर लापरवाही नहीं करते। ओटिस कोई भगवान तो हैं नहीं जो ओटिस बोलकर सब बातों से बरी हो जाए। इसलिए जिस ऑफीसर ने यह बोर्ड नहीं लगाया और ओटिस कंपनी के उस अफसर, जिसने लापरवाही की, उनके बारे में आपको विचार करना होगा। मैं जानना चाहता हूं कि ओटि स कंपनी के साथ आपका एग्रीमेंट है तो क्या वे हर महीने चेकिंग करते हैं या बुलाने पर ही चेक करते हैं? एयर कंडीशन्ड सबके घरों में लगे हैं, सरकारी एयर कंडीशन्ड लगे है जब उनको फोन करते हैं तो आते हैं। ओटिस कंपनी वालों ने लास्ट में कब उसकी चेकिंग की? एक साल में यह एसक्लेटर कितने दिन चली, कितनी बार खराब हुई? अगर यह आप बता सके कि कितने लारजेस्ट पीरियड से , 1992 से यह लगी हैं इस बीच कितने दिनों यह बिल्कुल बंद रही यह इन्फोर्मेशन दे दें तो पता चल जाएगा कि इसकी मेंटेनेन्श कैसे होती हैं?

आपने इन्क्वायरी रिपोर्ट मांगी थी। कल शाम तक आपके पास यह इंक्वायरी रिपोर्ट आ गई होगी। उस रिपोर्ट में क्या हैं, यह सदन को बता देंगे तो हमें भी पता चल जाएगा। अगर यही हादसा, जैसा कि आप प्राइवेटाजेशन की बात कर रहे हैं मिस्टर वाइस चेयरमैन अगर किसी प्राइवेट कंपनी में ऐसा हादसा हो जाता तो क्या आपका यही व्यवहार होता जो आज हैं? चाहे सी.ए.ओ. चाहे सी.एम.डी. हो, चाहे जनरल मैनेजर हो, चाहे वहां के शेयर होल्डर जिनका मैनेजमेंट से कोई मतलब नहीं होता उनको एक साथ आपने अरेस्ट कर लिया और अरेस्ट करने के बाद तय हुआ कि कौन गिल्टी हैं, कौन नहीं हैं। इस तरह के डबल स्टैण्डड हिंदुस्तान में चलेंगे तो एफिसियंशी नहीं आएगी। चाहे प्राइवेट हो, चाहे पब्लिक हो, एकाउंटेबिलिटी रखनी पड़ेगी। उस एकाउंटेबिलिटी के तहत, मैं चाहता हूं कि क्या आपसे आशा की जाए कि जो भी रिसपवोंसिबल हो उसके अंगेस्ट वही एक्शन लेंगे जो देश के किसी भी नागरिक के साथ, किसी भी ऑफीसर के अगेस्ट एक्शन लिया जाता हैं। मैं इस

संदर्भ में कोट करना चाहात हूं जो हिंदुस्तान टाइम्स में 14 दिसंबर को छपा था। ज्वांइट कमिश्नर ऑफ पुलिस ऑपरेशन्स श्री पूर्ण सिंह का स्टेटमेंट हैं "We have registered a case of causing death due to negligence and causing injury. As soon as we are able to fix up the responsibility, we will make arrests." मुझे अच्छा लगेगा कि हर केस में या तो ऐसा किया जाए कि वन्स रिस्पोसिबिलिटी एस्टेबलिस हो जाए तो तभी अरेस्ट हों। बाकी सभी केस में तो देखते हैं कि एक चर्चा हुई, 5-10 आदमियों को अंदर ले लिया जाता है और फिर डिसाइड होता हैं कौन रिसपोंसिबल हैं। दूसरा, आपने जो इंक्वायरी के लिए काम दिया वह 48 घण्टे में करने का आर्डर दिया। एक्स डायरेक्टर, एक्जयूकेटिव डायरेक्टर और जनरल मैनेजर, जो इस बात के लिए जिम्मेदार हैं उन्ही से आप बोलते हैं कि आप बताओं कि आपने गलती की कि नहीं। यह कैसी इंक्वायरी हुई? यह सिस्टम बदलना होगा। यह कैसी इंक्वायरी हुई? जो लोग इस काम को संभालने वाले है उनसे आप कहते हैं कि इंक्वायरी करो। वे तो इंक्वायरी करने वाले हैं इसलिए अपने आपको एब्जर्ब कर लेंगे और अपने नीचे के लोगों को भी एब्जर्ब कर लेंगे जिससे इस इंक्वायरी में कुछ नहीं निकलेगा, उनके ऊपर कोई आंच नहीं आएगी। उनके ऊपर कोई आंच न आए। यदि इन्क्वायरी करानी हैं, मैं नहीं कहता कि आप सी.बी.आई. से इन्क्वायरी करानी हैं, मैं नहीं कहता कि आप सी.बी.आई. से इन्क्वायरी कराएं, पुलिस से इन्क्वायरी कराएं लेकिन कम से कम दूसरे डिपार्टमेंट से इन्क्वायरी कराएं जिसका इस डिपार्टमेंट से कोई मतलब न हो। हमारे अफसरों को आप कब तक इनह्यूमेर बनाए रखेंगे? मैं इसलिए इनह्यमेनिटी की बात कह रहा हूं कि वहां पर कम से कम 15-20 इमीग्रेशन अफसर बैठे रहते है। इतने सारे वहां लोग काम पर रहते हैं जब हवाई जहाज आता हैं, यह सारे के सारे इमीग्रेशन अफसर, पुलिस अफसर किसी को ह्यूमेनिटी क्यों नहीं हुई, लोग चिल्लाते रहे, कोई हेल्प करने नहीं आया? क्या इस तरह की ट्रेनिंग हम हिन्दुस्तान में अपने अफसरों को दे रहे हैं कि एक्सीडेंट में एक भी हेल्प करने नहीं आए। मैं आपको बताऊं कि फ्रांस में अगर सड़क पर एक्सीडेंट हो जाए और कोई भी नागरिक वहां से जा रहा हो, अगर वह आदमी हेल्प नहीं करे तो उसके ऊपर एक्शन हो जाएगा। लेकिन यहां पर एयरपोर्ट के अंदर कितने सरकारी अफसर बैठे थे, किसी ने यह नहीं सोचा इतना बड़ा हादसा हो गया हैं कि उनकी हेल्प करें। एक मर रहा हैं, एक लेडी का पूरा पांव छिल गया, उसकी हड्डिया दिखाई दे रही हैं, कराह रही हैं लेकिन कोई सुनता नहीं हैं। आप इसके लिए क्या आगे करने वाले हैं जिससे इस तरह की भावनाएं अफसरों में लाई जा सकें। कितने अफसर वहां बैठे थे जरा इन्क्वायरी में पता लगाएं। ओटीज ने आलरेडी इंस्पेक्शन किया हैं या नहीं अभी तक और अगर किया हैं तो उनकी क्या ओपीनियन रही हैं? अखबारों में खबरे आई हैं कि कुछ बोल्ट लूज थे। क्या यह बात सही हैं कि बोल्ट लूज थे?

अखबार में यह भी आया हैं, (समय की घंटी) Sir, I have only two more points. बड़ा दुख होता हैं, मैं यह बात पढ़ कर सुनाता हूं जो एक्सप्रेस न्यूजलाइन में 14 दिसम्बर को छपा हैं। क्यों लेट हुआ हैं, यह बात बहुत पहले होनी चाहिये थी। आपके एक इंजीनियर एस0के0 मिश्र साहब एयरपोर्ट अथारिटी डिप्टी डायरेक्टर हैं, उन्होने एक्सप्रेस न्यूजलाइन को 14 दिसम्बर को क्या कहा इस हादसे के बाद, यह सुनिये। उन्होने कहा –'We cannot have engineers sitting near every machine.मैं नहीं कहता कि आप इंजीनियर को सब जगह रखिये। आप अपने सिस्टम से चलिये। लेकिन पब्लिक में तो कम से कम ऐसी बात मत बोलिये। सुनने मे लगता हैं जैसे कोई भावना हैं ही नहीं। ऐसी बात बोलने की क्या आवश्यकता हैं जो इस तरह की बातें अखबारों में छापें। लोग क्या सोचेंगे आपके लिए, हमारी सरकार के लिए, हमारे अफसरों के लिए? यह मुझे बातएं कि क्या वास्तव में एक ही शिफ्ट इंजीनियर रहता हैं और वह एक शिफ्ट इंजीनियर हादसे के समय कहां था और क्या कर रहा था? अगर मुझे इसकी जानकारी आप दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। वह कितनी देर में वहां पहुंचा एक्सीडेंट की साइट पर? वीडियों कैमरे कितने लगे हुए हैं और कितने मोनिटर काम कर रहे हैं और जो वीडियों कैमरा को मोनिटर कर रहा था , उसने क्या किया? उसने कोई रिकार्ड भी नहीं किया, मैंने सुना हैं। इतना देश का पैसा क्यों बरबाद कर रहे हैं अगर हम सिक्युरिटी नहीं कर पाते, मशीन को चला नहीं पाते। आपने तो कहा हैं कि 3.20 पर सब काम हो गया, हम आपकी बात पर विश्वास करते हैं कि आपने वही खबर दी हैं जो आपको दी गई हैं। लेकिन ऊषा रानी नागपाल का कहना हैं, उसने स्टेटमेंट दी हैं कि 55 मिनट तक वह जमीन पर पड़ी रही, उसको किसी ने सहायता नहीं दी। यहां तक कि एक पुलिस अफसर का भी बयान आया हैं , मैं आज कहीं पढ़ रहा था कि वहां पर एंबुलेंस भी नहीं थी। एंबुलेंस के लिए उसको एयरपोर्ट अथारिटी वालों को और किस किस को हाथ जोड़ने पड़े तब जा कर के एंबुलेंस दी गई। लेकिन ऐसी परिस्थति में वहां पर सैकड़ो गाड़ियां खड़ी रहती हैं, एयरपोर्ट पर टेक्सियां खड़ी रहती हैं क्या हम इस व्यवस्था में इतने कमजोर हैं कि एक टेक्सी में बैठा कर उसको अस्पताल में नहीं पहुंचा सके? और वह लेडी वही कराहती रही। कहां हमारी सरकार जा रही हैं, कहां हमारे लोग जा रहे है, कहां हमारी भावनाएं जा रही हैं, मैं तो इस बात को समझ नहीं पा रहा हूं। इन्टरकाम काम नहीं कर रहा था। पूरे एयरपोर्ट पर इन्टरकाम लगा हैं। क्या आप पता लगाएंगे कि इन्टरकाम कब से काम नहीं कर रहा हैं? क्या उसका इलाज करेंगे कि आगे से इन्टरकाम चलता रहे? वह किसने सप्लाई किया हैं? उसकी भी प्रापर सर्विस हो रही हैं या नहीं हो रही हैं? कोई अलार्म सिस्टम है कि नहीं? सारे वर्ल्ड के एयरपोर्ट पर यह मैंने सुना है। मुझे मालूम नहीं हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि अलार्म सिस्टम कुछ होता हैं। यहां अलार्म सिस्टम हैं कि नहीं हैं? अगर नहीं हैं तो क्या

भविष्य में लगाएंगे? एक कोई रैपिड इन्टरवेंशन व्हीकिल –ऐसा भी इमरजेंसी के लिए शहरो में होता हैं, बड़े-बड़े देशों मे डेवलप्ड कंट्रीज में। यहां भी मैने सुना कि कुछ हैं। सिस्टम हैं आपका, प्रावधान हैं कुछ आपका। लेकिन यह रैपिड व्हीकिल – अगर उसका प्रावधान हैं तो उस दिन अवेलेबुल क्यों नहीं था? अगर नहीं है तो आप इसका प्रावधान करेंगे क्या? क्या यह प्रावधान बनाएंगे? वाईस चेयरमैन साहब, आपने मुझे मौका दिया, यह ह्यूमैनिटी की बात थी। मैं जानता हूं कि मैंने बहुत सारे सवाल किए हैं। मैं माफी चाहता हूं क्योंकि सवाल ज्यादा हो गए है। लेकिन मैं इतना विचलित हूं इस बात को लेकर इसलिए मुझे ज्यादा समय लेना पड़ा। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : धन्यवाद बागड़ोदिया जी। Now 6.50 P.M. I have before me eleven names. If I sense rightly, Bagrodiaji has : Hon'ble Members, it is covered almost all the points. I would request the hon. Members who would be speaking now, not to repeat the points which have been made by Mr. Bagrodia, ^fl^ cbHcHl f^l^ I

श्रीमती कमला सिन्हा।

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार) : मुझे कुछ नहीं पूछना हैं। मेरे प्वाइंट्स इन्होने काफी कवर कर दिए हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : थैक्यू। बहुत शुक्रिया। वही मैं चाहता हूं आपकी इजाजत हो तो। सुरेश पचौरी जी।

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं इस दुभाग्यजनक घटना के संबंध में मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि जो उन्होने कारण बताए हैं कि इस्कलेटर की आखिरी सीढ़ी की लोहे की प्लेट खिसक गयी थी तो उसका कारण जांच रिपोर्ट में स्क्रू का ढीला होना बताया गया हैं या अन्य कारण बताए गए हैं? यह मैं आपके माध्यम से जानना चाहूंगा।

दूसरा, एक जांच दल इन्होने बनाया हैं। एयरपोर्ट अथारिटी आफ इंडिया से सम्बद्व वह मामला था और जांच दल इसी विभाग के लोगों का बनाया हैं। क्या इसके पीछे जो औचित्य हैं उससे वे सहमत हैं और जो जांच रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी हैं उन्हे, उस रिपोर्ट से क्या वे संतुष्ट हैं? यदि हां, तो वह जांच रिपोर्ट इस सदन के पटल पर प्रस्तुत करेंगे? जांच रिपोर्ट आने के बाद जो जिम्मेदार लोग हैं क्या उनके खिलाफ कार्यवाही होगी? उनमें से कुछ को जांच रिपोर्ट के बाद अभी गिरफ्तार किया गया हैं। यदि हां, तो वे कौन-कौन से लोग हैं?

मेरा आखिरी प्रश्न यह है कि इस्कलेटर के लिए जिस कंपनी का जिक्र किया गया हैं-

ओटिस कंपनी का- उसकी क्रडिबिलिटी क्या हैं? यहां के रखरखाव और इसकी पीरियाडिकल जांच के लिए कब तक का समय दिया गया था? क्या ऐसी भी व्यवस्था थी कि इस कंपनी को यह दायित्व सौंपा जाता कि अगर इनका टाइम पीरियड भी खत्म हो जाए तो भी समय समय पर इस कंपनी के कुछ अधिकारी आकर इस इस्कलेकर की पीरियाडिकल जांच करते, या यदि इस कंपनी को यह जिम्मेदारी नहीं दी गयी तो एयरपोर्ट अथारिटी आफ इंडिया के द्वारा किनको यह जिम्मेदारी दी गयी कि वे समय समय पर इस प्रकार की जांच कर सकते? फ्रांस की एक सड़क दुर्घटना का जिक्र मेरे एक साथी ने किया हैं मान्यवर। हमारे यहां तो सड़को पर कई दुर्घटनाएं हो जाती हैं। अनेक लोग शिकार हो जाते हैं, उनका जिक्र नहीं होता है। लेकिन यह जो दुर्घटना एयरपोर्ट पर हुई हैं यह अपने आप में पहली घटना हैं। इसलिए यह बहुत संवेदनशील भी है और दुर्भाग्यजनक भी हैं। इसलिए इस जांच रिपोर्ट के जो तथ्य आए हैं उनको बहुत गंभीरता से मंत्री जी को लेना चाहिए ऐसा मेरा आपके माध्यम से निवेदन हैं

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : धन्यवाद पचौरी जी। श्री रामदेव भंडारी जी।

श्री रामदेव भंडारी (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, बागडोदिया साहब ने सारे सवाल पूछ लिए हैं जो मैं पूछना चाहता था। महोदय, एक तो निश्चित हैं कि यह सामान्य दुर्घटना नहीं हैं । इसके पीछे एअरपोर्ट पर काम करने वाले लोगों की लापरवाही और कर्त्तव्यहीनता का बहुत बड़ा उदाहरण हैं। महोदय, दर्जनों की संख्या में ऑफिसर्स और कर्मचारी एअरपोर्ट पर मौजूद रहते हैं, घूमते रहते हैं लेकिन उन में से कोई भी उस दुर्घटना को रोकने की बात तो छोडिए मदद देने के लिए भी कोई आगे नहीं आया। महोदय,मैं ने डॉमिस्टिक एअरपोर्ट के बारे में सरकार से एक सवाल पूछा था कि वहां कितने ऑफिसर्स ऐसे हैं जोकि 5 वर्ष से अधिक समय से काम कर रहे हैं। उन्होने 10 ऑफिसर्स के नाम दिए थे जिन मे से कोई 83 से हैं, कोई 84 से हैं और कोई 85 से हैं। महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि कुछ वेस्टेड इंटरेस्ट के ऑफिसर्स और कर्मचारी वहां कुंडली मारकर बैठे हैं। मुझे यह पूरी जानकारी हैं। उन में से कोई 10-15 वर्ष से होंगे।उन का वेस्टेड इंटरेस्ट हैं और उन को किसी का भय या किसी प्रकार की चिंता नहीं हैं। मेरे विचार से नॉर्मल पोस्टिंग की टर्म 3 साल या 5 साल की होती हैं।इसलिए मैं मंत्री जी से पूछना चाहूंगा कि क्या वे ऐसे ऑफिसर्स के बारे में रिव्यू कराएंगे जो वहां कुडंली मारकर बैठे है? जिन ऑफिसर्स या कर्मचारियों का वेस्टेड इंटरेस्ट हैं उन को वहां से बदलना चाहिए और उन की जगह नए ऑफिसर्स को लाना चाहिए जो अपने कर्त्तव्य का ठीक ढंग से निर्वहन कर सके और इस तरह की लापरवाही और कर्त्तव्यहीनता न करें। धन्यवाद।

7.00 P.M.

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : धन्यवाद भंडारी जी। श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया।

श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया : सर, जो दुर्घटना हुई यह बहुत दुखदायी है। सर, मैं बताना चाहता हूं कि मैं ने पिछले 10 वर्षो में एअरपोर्ट पर प्रवासी भारतीयों की तकलीफों के बारे में बहुत मुहिम चलायी हैं।उस के पीछे एक स्पेशल परपज भी था कि जो बाहर से सिख आते थे, उन को तंग किया जाता था। जब वह वापिस जाते थे तो खालिस्तानी उन की छोटी-छोटी शिकायतों को एंटी-सिख बताकर उसे बड़ा बना देत थे। मैं उन को रोकना चाहता था और कहता था कि भाई ये भारत का दोष नहीं , एक दो मुलाजिम ऐसे हो सकते हैं। सर , मैं 10 वर्ष मायनोरिटी कमीशन का सदस्य भी था और उन 10 वर्षो में मैं ने बहुत अनुभव किया। उस के बाद जब मैं मंत्री था तो उन की शिकायतों को लेकर मैं ने दो-तीन दफा रेड भी किया और देखा भी हैं। मंत्री जी मेरा अनुभव हैं और मैं साफ बताऊं कि पहली बात तो यह कि बहुत किश्तियों का सवार डूबता हैं और एअरपोर्ट पर पता नहीं किस का हुक्म है? वहां डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म हैं, रेवेन्यू है, आई.बी. है, इमिग्रेशन में दिल्ली पुलिस है, होम मिनिस्ट्री हैं, सिवल एविएशन हैं, रॉ हैं और ये सभी एजेंसिया अपने-अपने विभागों को जवाबदेह है, इन को नहीं। आप बराए मेहरबानी एक काम कीजिए कि एअरपोर्ट पर जितनी एजेंसिया काम करती हैं, उन को डी0जी0सी0ए0 या सिविल एविएशन मिनिस्टर के प्रति जवाबदेह करिए।तब आप का काम चलेगा क्योंकि वहां कोई किसी की परवाह नहीं करता।

दूसरी बात मैं आप को कभी पूरी बात बताऊंगा क्योंकि उस में बहुत टाइम लग जाएगा, लेकिन आप यकीन मानिए कि कोहराम मचा हुआ है। मैं आप को बताऊं कि लोग जब इमिग्रेशन काउंटर पर आते हैं तो कैसा बर्ताव होता हैं। एक आदमी हैं जिस के पास उसे काउंटर पर दिया, वहां 4-5 कर्मचारी कहेगा कि यह क्या निकला लिया? यह कनाड़ा का इमिग्रेशन वाउचर हैं। वह सुबह दो बजे उतरा, शाम को वह 5 लाख का बिक जाता हैं। सर, जब मैं ने पूरी मेहनत की तो यह अब सिर्फ दो सौ का रह गया। सर, आगे देखिए कि एक आदमी बाहर से आया हैं और क्या कोहराम मचा हैं। ----- क्या कोहराम मचा हुआ हैं? गुरदेव सिंह जोहन वल्द मेहर सिंह, कामरेड सुरजीत के गांव का, बंडोल का, जालधंर जिले का, उसने 1984 में कहीं मुर्दाबाद कह दिया। बस उसको काली सूची में

डाल दिया। अब गुरदेव सिंह नाम के 26 आदमी हैं, कोई गुरदेव सिंह आया तो कहा कि चलो वापस, कनाड़ा वापस चलो। अरे, गुरदेव सिंह, उसके पिता का नाम, डेट आफ बर्थ, जिला, जात का जाट हैं या दर्जी हैं या किसी दूसरी जाति का हैं, कुछ तो जांच कर लो। नहीं, सबको एक रस्सी से बांध रहे हैं। यह कोहराम मचा हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, अब आखिरी बात, ज्यादा समय मैं नहीं लूंगा, कस्टम का क्या हाल हैं? खासतौर से, मैं नहीं कहता, सिखों को और मुसलमानों को तो अलहदा कर लेते हैं लूटने के लिए कि यह तो मुसलमान सऊदी अरब से आया है और यह सिख कनाड़ा, अमरीका से आया हैं, एअरपोर्ट ये निकल कर टैक्सी स्टेंड का जो 300 गज का रास्ता हैं, वहीं उनके साथ महाभारत हो जाता है। कभी आप वहां वेश बदल कर देख लीजिए। यह जो वहां पोर्टर है, वह अंदर से ग्राहक को नजर कर लेते हैं और निकलते ही कहते हैं कि आपने यह नहीं किया, कस्टम नहीं किया, आप यह भूल गए। सौ डालर, दो सौ डालर मांग लेते हैं । आप देखिए, टाइम्स आफ इंडिया में छपा हैं। आपने नोटिस नहीं लिया होगा, मैंने बहुत नोटिस लिया हैं।टाइम्स आफ इंडिया में छपा है कि दिल्ली पुलिस ने, कस्टम वालों ने गुप्त तौर पर क्लोज सर्किट टीवी और कैमरे लगा कर देखा। अब जो काउंटर हैं, वहां जिसने पैसे लिए और पैंट में डाल लिए, टीवी में वह पकड़े गए। मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब बाहर से लोग आते हैं तो माइग्रेशन पेपर मांगते हैं, जबकि पासपोर्ट इंडियन है तो माइग्रेशन पेपर देखने की जरूरत क्या हैं। वह तो वहां से आ रहा हैं, यही उसे दिखाना हैं। मैंने लिखवा कर वहां लगवा दिया था Indians need not show green card or, visa voncher. यह मैंले लिखवाकर लगवाया । आपकी गवर्नमेंट आते ही वह हट गया। उसका यह फायदा था कि आदमी कह सकता था कि आप मुझसे वाऊचर क्यों मांगते हो, मैं तो इंडियन हूं। वहां स्टाफ के लोग बोलते हैं कि भले ही आप इंडियन है, वाऊचर लाओ। अरे, भलेमानस, यह जो जाने का वाऊचर हैं, आने का तो यह हैं पासपोर्ट भारत का। तो यह इतना कोहराम वहां मचा हुआ हैं । मेरे अपने तजुर्बे हैं, मैं पिछले वर्षो में कनाड़ा, अमरीका आस्ट्रेलिया बहुत घुमा हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, एक बात मै जरूर कहता हूं कि परमानेंट तौर पर, जैसे कि डिपार्टमेंटल स्टोर्स में क्लोज सर्किट टीवी लगाए जाते हैं और मोनेटरिंग कैमरे होते हैं, जिससे नजर रखी जाती हैं और अगर किसी ने सामान उठाया तो पकड़े जाते हैं, उसी तहर आप एअरपोर्ट पर भी व्यवस्था करें। आपने देखा होगा, कितने ही फिल्म एक्टर पकड़े गए, नेता पकड़े गए ब्रतानिया में। तो एक तो वह आप लगवाइगा। अगर वह लगा होता तो यह जो लड़की का एस्केलेटर में फंसने का कांड हुआ, उसमें दोषी पकड़े जाते। एक तो जनाब वह आप क्लोज सर्किट का करें। इसे आप लिख लें ताकि भूल न जाएं। मैं तो जला हुआ

हुं। सर, बाई गोड मैं ने बहुत लड़ाई लड़ी हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, मै आपको एक बात बताता हूं, अस्सी अस्सी वर्ष की औरतें जब यहां आती हैं, सिखों में एक रिवाज है, सगी मां भी हो तो कहेंगे कि माता जी, यह हमारा एक डिब्बा ले लाइए। माता जी को क्या पता कि डिब्बे में बोतल है। कोई सिख विदेश से आए, शराब के बगैर नहीं आते। पता नहीं, यह भगवान की क्या कृपा हैं।

नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चमन लाल गुप्ता) : आपके सुझाव मैं लिख रहा हूं।

श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया : अच्छी बात हैं, मंत्री जी। आप भी पंजाबी हैं, जम्मू पंजाब पास पास हैं।

हमारे शरद यादव जी भी महान नेता हैं, बहुत अच्छे आदमी हैं।

तो उपसभाध्यक्ष जी, मैं कह रहा था कि जब वह बोतल माई की पकड़ी गई तो वह कहती हैं कि मुझे तो पता नहीं। पंजाबी में कहती हैं—बेटा, मैनू की पता किसने फरा दिती। तो वहां बोलते हैं कि माताजी, या तो 200 डालर दो या फिर यह यहीं छोड़ जाओ। यह क्या हो रहा हैं? एक तो, आनरेबिल मिनिस्टर साहब, यह कैमरे लग जाएं, क्लोज सर्किट टीवी लग जाएं तो उससे आपका काम हो जाएगा। इसके साथ सारी अथोरिटी एअरपोर्ट की डीजीसीए को दे दी जाए यानि जो चीज एअरपोर्ट के अंदर हैं वह सब उनके मातहत हो जाए। क्योंकि जब वह पूछते हैं कस्टम वालों से कि मुझे शिकायत आई हैं कि तुमने पैसे लिए हैं तो वह कहते हैं कि आप तो डीजीसीए हैं, हम तो रेवेन्यू मिनिस्टरी को रिपोर्ट देंगे, आप कौन हैं पूछने वाले । अब यह घर उनका, एअरपोर्ट उनका, आप तो सफेद वर्दी पहन कर सिर्फ कस्टम देखने के लिए आए हैं और आप कहते हैं कि हम जवाब नहीं देंगे। मेरा आग्रह होगा कि एक मिनिस्टरी के नीचे एअरपोर्ट की एकाउंटेबिलिटी तय कीजिए। नम्बर दो, सर, क्लोज सर्किट टी0वी0 कैमरे लगाएंगे? इन दो बातों से काफी सुधार हो सकता हैं। इसके साथ ही साथ मैं पूछना चाहता हूं कि शिकायत करने का क्या तरीका है? अगर कोई अंदर किसी से पैसे मांगता हैं, जलील करता हैं तो क्या करना चाहिए? सर, मैं क्या बताऊं छोटे-छोटे मसले हैं, जैसे डीफेस का मामला हैं। पासपोर्ट को देखते ही कहेंगे, अरे, इसको तो हल्दी लगी हैं, रंग लग गया, 200 रूपए दो, डीफेस हो गया हैं। कितने ही लोग खाना खाते-खाते पासपोर्ट ऐसे ही रख देते हैं, क्या हल्दी जानकर लगाते हैं। थोड़ा सा कहीं पसीना भी लग गया तो कहेंगे कि पानी से आपने डीफेस कर दिया, नई बुक लाओं वरना चलों अंदर। सर, एयरपोर्ट पर पासपोर्टो के असत्य, डीफेस हुए 2600 केस मैडम ढींगरा की अदालत में

तीस हजारी में चल रहे है। सर, मैं तो सबके लिए लड़ता हूं और मेरे पास कोई आए तो मेरा पहला काम होता हैं कि मै उसकी मदद करूं। कई लोग कनाड़ा से, अमरीका से आए छुट्ठी खत्म हो गई, 180 दिन की टेन्योर भी खत्म हो गई लेकिन वापिस नहीं जा सके। ऐसी मुर्गी फांसी कि वह निकल ही नहीं सकता। इस तरह के कामों से देश की बदनामी होती हैं। 18-20 साल के बच्चे इंडिया आना ही नहीं चाहते, वे कहते हैं कि क्या जाना हैं, जैसे वल्वर्स पड़ती हैं ऐसे ये लोग पीछे पड़ते हैं। ये बहुत भयानक मसले हैं, इनके बारे में कोई कमेटी बनाकर पता कराइए। मेरा भी नाम सबके आखिर मे लिख लेना, मैं आपको बताऊंगा कि क्या हो रहा हैं। आप बड़ी पोजीशनों में हैं, जब आप जाते हैं तो सफेद वर्दी वाला बाहर लेने आता हैं, मैं भी जाता हूं तो छोड़ने आता हैं, हमारी बात और हैं, आप वी0आई0पी0 है, जेब मे लाल कार्ड है, लेकिन उनसे पूछिए जो सऊदी अरब से, दुबई से, कनाड़ा से, अमरीका से आते हैं, कैसे वे जलील होकर रोते हुए बाहर आते हैं और रोते हुए वापिस जाते हैं। तो, सर एयरपोर्ट पर जो कुछ तकलीफें हैं उनका निवारण कीजिए, उसकी पड़ताल कीजिए, शिकायत का फौरन समाधान कैसे हो, इसका प्रबंध कीजिए और डी0जी0सी0ए0 के मातहत सारा कंट्रोल दीजिए और क्लोज सर्किट टी.वी. कैमरे का भी प्रबंध कीजिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): It is said that good judgements come from experience and experience comes from bad judgment. I am confident that he will take the benefit of this good judgement.

SHRI BRATIN SENGUPTA (West Bengal): Sir, I want to first express my happiness at the news received yesterday morning that action had already been taken against two of the erring officials of the Delhi Airport where the accident took place two days agp. While concurring with the sentiments expressed by various Members in the House, 1 request that a comprehensive review of the entire saftey system inside the airport and in the entire area should be undertaken. More action is, perhaps, necessary to correct the erring officials in future. It is absolutely correct that these officials are public servants and they have been negligent in their duties on many occasions and in many cases there are actions and punishments. They have been, sometimes, conspicuously absent in the name of inquiries and prolonging the inquiries. So, more actions are necessary.

I will seek the indulgence of the Minister for two minutes to raise certain other points associated with this. Accidents in this country have become more of a phenomenon than mere accklents. Why are there so

many accidents on the roads of Delhi every day or every moment? It may not be, strictly speaking, concerned with you. But don't you know that every moment an accident is taking place on the Delhi roads? I am trying, through you, Mr. Minister, to draw the attnetion of the entire Government and of the entire machinery that we have. There have been a spate of bus overturns, particularly, buses carrying school-chiUren, across theYamuna Park and in many other areas. In the first half of this year alone, 88 lives have been tost on the Delhi roads simply because of road accidents. Everybody must have seen the electronic score board at the ITO crossing where a record of accidents and casualties due to road accidents are registered every moment.

Newspapers have to bring out every day a separate column on how many people, how many innocent passengers, *bonafied* passengers, thed in road accidents. I am not talking about the road mishaps and other things which are taking place many parts of the country. 1 am not entering into the question of railway accidents which have endangered the lives of many common citizens of this country, every now and then. There is no end to this. There have been many accidents in Firozabad and many other places, the details of which I will not go into. In Karnataka, in Davengere district, I am taking the indulgence, because it is a very serious issue. As this is a very serious issue, there is hardly any opportunity *...Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Mr. Sengupta, please listen to me. clarifications are being sought on the matter of the escalator accident. Please do not enlarge the issue.

SHRI BRATIN SENGUPTA: I know. Sir, I am conocluding in a short while. Many poor people are dying because of road accidents, for which there is not remedy, no compensation, in Karnataka, in Davengere in the same thestrict, 95 people thed when a bus overturned. Very recently, in Calcutta, there has been a spate of bus accWent.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR) Mr. Sengupta, 1 am very sorry to interrupt you. Please confine yourself to the clarifications with regard to the accident of escalator.

SHRI BRATIN SENGUPTA: I know, I know, I am coming to it. Now, here, there is no question of compensation. We are not even in a

position to compensate and the poor people have been dying every day. That is the point on which I want to lay stress. It is no tonger an accident. It is becoming more common, particularly in in the metropolis, endangering the lives of the people, lower-middle-class people, the poor people are the victims, for which there is no remedy, no action. I would like to draw the attention of the hon. Minister that at the time of dealing with the escalator issue, he may also take into account these aspects and he should be more stern and take stern action in the regard. I also request the hon. Minister to be very firm regarding all the accidents which have been a nightmare to the common people, passengers in trains, buses, etc. in our country.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SMRODKAR): Thank you. Shri Sanjay Nirupam, plesse remember, we are discussing about the escalator acckient, let us not enlarge the scope any further.

श्री संजय निरूपम (महाराष्ट्र) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय को यह बताना चाहता हूं कि दुर्घटना हुई, बयान आ गया। बयान के बाद हम अपने क्लेरिफेकेशन भी पूछ लेंगे और उनका जवाब भी पा लेंगे। लेकिन उसके बाद कोई ऐसी व्यवस्था नहीं की जाएगी जिससे आने वाले दिनों में दुर्घटनाएं रोकी जा सके। मुझे लगता हैं कि हर सत्र में इसी तरह किसी न किसी दुर्घटना के ऊपर स्टेटमेंट आता हैं, क्लेरिफिक्केशन पूछे जाते हैं और उनका जवाब दिया जाता हैं। मोटे तौर पर सबसे बड़ा सवाल सुरक्षा से जुडा हुआ हैं। जिस महिला की बच्ची की मृत्यु हुई, वह इससे पहले जब इंडिया आई थी तब उसकी एक बच्ची की मृत्यु हुई थी-ऐसा किसी ने मुझे बताया और इस बार जब वह इंडिया आई तो उसकी दूसरी बच्ची की भी मृत्यु हो गई और अब वह महिला कंसीव ही नही कर सकती हैं। अब आप उसको पांच लाख कम्पनसेशन दे दें या पचास करोड़ दे दें, कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। उसकी लाइफ में अब वह खुशी आने वाली नहीं हैं। महोदय, सवाल कम्पनसेशन का नहीं हैं। सवाल एयरपोर्ट पर लगे एस्केलेटर्स का हैं कि वे कितनी अच्छी दशा में हैं। मैं देखता हूं मुम्बई एयरपोर्ट पर लगा एस्केलेटर हमेशार हिलता-डुलता रहता हैं, कई बार तो बंद ही पड़ा रहता हैं। एकदम दोषपूर्ण अवस्था में हमारे हवाई अड्डों पर काम चल रहा हैं। महोदय, सिर्फ एस्केलेटर का ही सवाल नहीं हैं, एयरपोर्ट अर्थारिटी के पूरे कामकाज पर बहुत अच्छे ढंग से ध्यान देने की जरूरत हैं। आप सबको याद होगा कि यहां आई.एल.एस. की बात सामने आई थी कुछ साल पहले, इंस्टुमेंटल लैंडिंग सिस्टम के बारे में कि मुम्बई और दिल्ली के हवाई अड्डों को मॉडर्नाइज किया जाए और उसके तहत पांच सौ करोड़ का प्रोजेक्ट हैं। उसमें इंस्टुमेंट लैंडिग सिस्टम डेवलप किया गया जिसमें प्लेन ऑटोमेटिकली लैंड करेगा। किसी को पाइलट को बताने की जरूरत नहीं रहेगी। तो उस

पर पिछले ढाई-तीन वर्षो से काम चल रहा हैं और वह कंप्लीट ही नहीं हो रहा हैं। मेरे ख्याल से उस पर कोई इनक्वायरी भी चल रही हैं। वह भी सुरक्षा से जुड़ा हुआ प्रश्न हैं। मोटे तौर पर मेरा निवेदन यही हैं कि सुरक्षा से जुड़े हुए एयरपोर्ट अथॉरिटी के जितने भी डिवीजन है, उनके कामकाज पर तत्काल कड़ी नजर रखी जाए और सुरक्षा से जुडे हुए एयरपोर्ट अथॉरिटी के जो अधिकारी हैं, उनके काम की भी रेग्युलर समीक्षा की जाए। अभी मंत्री महोदय ने बताया कि यह रिपोर्ट 15 तारीख को आ जाएगी, मेरे ख्याल से वह रिपोर्ट आ गई होगी और मंत्री जी बताने वाले होंगे कि रिपोर्ट आ गई है।

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM (Tamil Nadu) : Sir, this is a very tragic incident which has occurred at the international airport. I would like to seek one or two clarifications. The Statement says, "The escalator was installed by the OTIS Company, an internationally leading supplier in 1986. It is maintained by them through a comprehensive maintenance contract, with monthly checking and on call as and when neccessary. There has never been an incident like this since its introduction." Sir, it was a very tragic accident. One child was killed. How are they going to sue this company? This is my first clarification.

The point is, there was this report in the newspapers, "Pioneer" and "Statesman". The companies are not maintaining the escalators properly. This is No.l. Secondly, it is a fact that no technical man was available in the airport at the tune of the accident. There was no technical man inside the airport. Even the officials and the policemen, who were present there, did not know how to stop the escalator. It was purely a technical fault. If anybody had known how to stop the escalator immeditely, the accident could have been prevented. That is why 1 ask this of the hon. Minister. A number of people, who were present there, did not know the operation of this system. The operation of the escalator is not an easy thing. In foreign countries, they have a red light and a green light, and every passenger would know the system very well. But, in our country, people do not know how to stop an escalator. Thirdly, as far as this accident is concerned, I would like the Minister to take necessary steps to prevent the recurrence of such a type of accident in future. Not only our people, but the people all over the world, may be apprehensive about this. Also, as regards the OTIS company, a lot of allegations are being made against this company, that the equipments are not being properly maintained and so on. This company is a multinational company, and the escalator is a sophisticated equipment. 1

want to ask the hon. Minister: For how many years, do you have a contract with this escalator company? You must have entered into an agreement with this company. It must be on a contract basis. The person, whoever was responsible for this, must be taken to task. In this connection, I would also like to know how much money has been paid for the maintenance of these escalators, and how far the maintenance work was going on. Now, the Minister went to the spot soon after the iicident took place, and we are happy that he took necessary steps. I hope he would clarify my point as to how we are going to solve this problem so that this kind of a mishap does not recur in future. Thank you.

SHRI H.K. JAVARE GOWDA (Karnataka): Sir, I would like to comment on page 2 of the statement, where it has been stated: "The escalator was installed by the OTIS company, an internationally leading supplier, in 1986. It is maintained Jjy them through a comprehensive maintenance contract, with monthly checking and on call as and when necessary." 1 would like to highlight this second sentence. Sir, we are told that they have booked a case under Section 304 (A) and Section 337 ofthe IPC. Sir, when the Minister says in the statement that there was a monthly checking, this itself would help the so-called accused getting acquitted. The House may recall that in the case of a motor car accident, how they took advantage of the fact of monthly checkings. Now, what are the guidelines? Escalator is a machinery which is working 24 hours. So, it should be checked on a regular basis. The Minister's statement talks of a monthly checking. Where does the fault lie? Is this just a routine kind of a statement or has it been prepared after giving it a detailed study? When the machine is checked, is there any specific proforma that is filled? What is the metal standard? What is the quality of the grease? What is the quality of the board that is used? What is its capacity? Apart from discussing all these factors, I wish to know, --it is good that the Minister went immediately to the spot and, on humanitarian grounds, extended whatever support was possible - what action is going to be taken against the man who was responsible for this? According to me, this statement gives a 50 per cent chance to the accused, whoever he may be, getting the benefit of doubt. Under these circumstances, from today itself, it is the duty of the Airports Authority of India to see that the escalator is checked up daily. It can be easily said that it was all right yesterday, but due to some mechanical defect or a manufacturing defect, the bolts were loosened, and for that they

were not responsible. They may say so in their defence. I advice the hon. Minister that they should have consulted some legal experts before making such a statement in the House. This will go to the help of the accused.

Sir, some senior Members have narrated their experience and informed the House as to what is happening there. We are not concerned whether these escalators are provided by a multinational company or some one else. I read it in a newspaper that a gentleman who travels about 35 times in a year said, "I am getting crack sounds for the last two months. But no one -repaired this escalator."

Sir, you are an advocate and you know how this type of reply is going to affect this case. I therefore, request the hon. Minister to ensure that the machinery is checked daily. They should take a serious note of it. For future, proper guidelines should be issed regarding operation of escalators at different airports, and they should put a man on duty for any kind of emergency.

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairmo'; Sir, I will try my best to confine myself to the subject we are discussi. but this particular subject „needs an elaborate discussion. I hope the hon. Minister, while replying, will concede our request for a fullfledged debate on this subject on some other day. Sir, this is not a mere accident, but it is an unprecedented and unexpected tragedy. The hon. Minister is new to this Ministry. I think he is not acquianted and conversant with this Ministry. Sir, mere suspension of the officials is not going to solve the problem. I want to make it clear. The Minister must try to find out whether it was a system failure or there was some lacuna on the part of the management. He must find it out.

The second point I would like to make is, for such emergencies, elevators in the foreign countries are fitted with two buttons, one at the top of the elevator and the other at the bottom of the elevator, and whenever the passengers find that something is going wrong, they immediately use those buttons so that the elevator is stopped. I want to know why such type of mechanism was not provided with this elevator.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR) : That is a red button.

SHRI N.THALAVAI SUNDARAM : There were green and red buttons fitted with this elevator.

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI : If it is so, then why was it not used? Sir, some responsible person should have been present near the escalator. Why was the escalator left unattended? Sir, I feel that due to development in sophisticated technology, the escalator should be so made that when the foot pad is removed, it should automatically stop there. Why was it not done? Everything is being taken casually. Here, I would li*ke* to tell one thing. On the 3rd of this month, a flight was ferrying from Delhi to Chennai - if my memory is correct, it was flight No. IC-540. Another flight was coming from Bangalore to Delhi. Both these planes were averted from a mid-air collusion. The matter was covered up there itself. Maybe, they might have ordered some inquiry; they will get a report, and then the file will be put on the shelf. The Delhi -Chennai flight was flying at a height of 26,000 ft. The Bangalore - Delhi flight was flying at a slightly higher altitude. I think the Bangalore - Delhi flight which was operated by a private airline could not maintain its permitted altitude. It has come down. Before collusion could take place, fortunately, it was found out by a device, by some alert officers and the accident was averted. Otherwise, byelections in 15-18 constituencies were to be conducted in Tamil Nadu as some 20 MPs were travelling in that. Please take note of this point. The Delhi-Chennai and the Bangalore-Delhi flights were about to collide. One flight's altitutude was 26,000 feet and another's was higher. But, fortunately, the pilot, who was commanding the Delhi-Chennai flight was alert and he saved more than 200 passengers. There are good officers also who are duty conscious. We cannot condemn all the officers outright. At the same time, such things are also happening. I will give you an example. For any stop-over of a flight, the time is forty-five minutes. But they used to stay for one hour and thirty minutes; no officer is bothered about it. Even though there are computers, no data is collected with regard to such type of inordinate delays taking place. Such things are happening in other services also. I do not want to go further. We have already lost one of our own second line leaders, Mr. N.V.N. Somu, when he was in the Ministry of Defence. He thed due to an accident. We "do not know what the reason is. Is it due to an accident or it was done by a neighbour or it was an act of sabotage? Still we do not know. The nation has not been informed as to how N.V.N. Somu has thed. ' He was in the Ministry of Defence.

On the basis of my experience often years, I am saying that whenever we raised issues, the Minister used to give some assurance but that

assurance never got implemented. I hope, Mr. Minister, in your regime, at least, it will be implemented. Please see to it that it is not repeated again.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): I think, it is a serious matter because two planes travelling in the opposite direction or in the same direction have to keep a certain vertical distance to avoid a mid-air collision. Perhaps, that was the thing you were referring to. Now, the last speaker is Mr. Miri.

श्री गोविन्दराम मिरी : क्लेरिफिकेशन के पैरा 2 में बताया गया हैं कि

जहां तक मुझे याद हैं एसक्लेटर पर लूज बैग ले जाने की अनुमति नहीं हैं। यह सारी घटना इसलिए हुई कि उस यात्री ने स्ट्रेप वाला बैंग, जो उसका नेगलिजेंस रहा, असावधानीपूर्वक खींचा, पता नहीं उसमें क्या सामान था कि उसके निकालने से झटका लगने से प्लेट खुल गई और इस कारण यह सारी घटना हुई। यदि वह ऐसा नहीं करता या बैग छोड़ देता तो य घटना नहीं होती। मैं यह जानना चाहती हूं कि वह यात्री कौन था? उसके बैग में क्या था? क्या उसे आइडेंटिफाई किया गया हैं? क्या उसकी इस नेगलिजेंस के लिए उसे भी इंक्वायरी के अंदर शामिल करके प्रोसिक्यूट करने की कार्रवाई की जा रही हैं या नहीं?

दूसरी बात मेरे मित्र ने कही कि वहां पर बोर्ड लगाना चाहिए। आप हर जगह देखें, हमारे पार्लियामेंट में भी यह सिस्टम हैं कि लिखा रहता हैं कि दस साल के बच्चे दर्शक दीर्घा में न जाएं, वैसे ही एसक्लेटर के लिए भी होना चाहिए। बच्चे चंचल होते हैं, इसलिए इसमें भी एक एज लिमिट होनी चाहिए कि इतने साल के बच्चे एसक्लेटर पर न चढ़े और लूज बैग न ले जाएं। यदि ऐसा साइन बोर्ड लगा दें तो यात्रियों को सहूलियत होगी।

एक बात और कहना चाहता हूं कि एयरक्राफ्ट के अंदर सीट बैल्ट और अन्य चीजें हैं उनके बारे में बताया जाता हैं, अनाउंस भी किया जाता हैं, लेकिन वहां डेस्टिनेशन पर क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए यदि इसके बारे में बताया जाए तो ज्यादा यूजफुल रहेगा कि आप एसक्लेटर का यूज कैसे करें या किसके प्रयोग से बचें आदि। यदि इस तरह की घोषणाएं जहां एसक्लेटर लगा रहता हैं की जाएं तो ज्यादा अच्छा होगा। सर एयरक्राफ्ट में एक्जिट होती हैं, इनसाइड में उस एक्जिट में दरवाजे के पास जो यात्री बैठे रहते हैं उनसे विशेष अनुरोध है कि वे इसे समझ लें कि इसका यूज कैसे होगा और बाहर कैसे निकला जाएगा। इसे यूज किया जाए, कैसे बाहर निकलेंगे। इस्केलेटर के पास जिन कर्मचारियों की ड्यूटी हो, चाहे वे किसी भी डिपार्टमेंट के हों, जिनको कम से कम इतना प्रारम्भिक नोलेज

हो, ऐसे लोगो की ड्यूटी लगाई जाए। इस प्रकार से यदि एस्केलटेर में बाधा आ जाए तो बंद कैसे किया जाए और फिर उसको चालू कैसे किया जाए, बटन कहां पर हैं, यह प्रिलिमिनेरी ट्रेनिंग दे दी जाए तो ऐसे हादसो से बचा जा सकता हैं। मैं समझता हूं कि डिपार्टमेंट तो कार्यवाही कर रहा हैं लेकिन माननीय मंत्री जी भी स्वयं ध्यान दे कर के निष्पक्ष एजेंसी से जांच कराएं ताकि इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो। अगर लेजर लगा होता, ऑटोमेटिक स्टॉपेज वाला सिस्टम लगा होता तो यह घटना नहीं होती। यह बड़ी दुखद घटना हैं और हम सब इस दुख में सहभागी है और आशा करते हैं कि ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं होगी, जो जो खामियां हैं, माननीय मंत्री जी उनको दूर करेंगे। मैं भी इस बात से सहमत हूं कि वहां पर जो कर्मचारी हैं, सभी एक ही अथारिटी के अन्तर्गत काम करें, सभी एक विभाग के प्रति जिम्मेदार हों। जितनी चीजें हैं जिनसे दुर्घटना हो सकती हैं, ऐसी चीजों की ट्रेनिंग चाहे इमीग्रेशन वालें हों,सिक्युरिटी वाले हों, चाहे किसी भी विभाग के हों, सब को कम से कम एक जनरल ट्रेनिंग दे दी जाए तभी इन दुर्घटनाओं को रोका जा सकता हैं। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADMK SMRODKAR): Mr. Minister before you start, I would also like to make a point which Mr. Miri also referred to. Now-a-days there is a growing tendency of using small cabin baggage trolleys which have castors. Now, those who use escalators keep these trolleys on the escalators and many a time they are not able to retrieve it properly and the trolleys get entangled into the steps which go on moving. I think some sort of attention may have to be paid to that thing also.

नागर विमानन मंत्री (श्री शरद यादव) : बहुत –बहुत धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष जी। यह घटना बहुत अफसोसनाक और तकलीफदेह हैं और मैं अपनी जिम्मेदारी मानता हूं। माननीय सदस्यों ने इस घटना की बाबत आज जो बहस में हिस्सा लिया, मैं उनका धन्यवाद करता हूं। इसमें बहुत सी ऐसी चीजें हैं, जिस काम में हम लोग लगे हुए हैं। इस बहस में माननीय बागड़ोदिया जी, पचौरी जी, रामूवालिया जी, सुदंरम जी, गौडा जी, विरूभी जी, देशमुख जी ने जो जो बातें कहीं हैं ।....(**व्यवधान**).... मैं मिरी जी को देशमुख जी कह गया था। ....(**व्यवधान**)....

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : मंत्री जी मुझे भूल गये तो मैं क्या करूं।

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, आपने जो बात कही उस पर भी मैं आऊंगा। आप तो इस समय इस सदन के मालिक हैं। आपने जो सुझाव दिया हैं, वह बहुत महत्वपूर्ण

हैं। आपने जो कहा हैं, अगर वह इंतजाम होता तो इस बड़ी दुर्घटना को टाला जा सकता था। इसमें बहुत से सवाल पूछे गये हैं, मैं उनकी सफाई देना जरूरी मानता हूं। बयान तो आप सब लोगों के हाथ में हैं लेकिन जो जो सवाल पूछे गये हैं, उनका थोड़ा-थोड़ा जवाब मैं देना चाहता हूं । विरूभी जी से मैं शुरू करूंगा। उन्होने जो चरखी-दादरी में एक-डेढ़ वर्ष पहले हवाई जहाज की दुर्घटना हुई थी, उसके बार में पूछा। उसके बाद ज्यूडिशियल कमीशन बैठा, कमीशन की फाइंडिंग्ज आई थीं, जजेज की फाइडिंग्ज आई थी, मैं यह बताना चाहता हूं कि ऐसे एक्सीडेंट्स को अवायड करने के लिए टी0सी0ए0एस0 सिस्टम सब में लगा हुआ है। वह सब में लगा हुआ हैं। विरूभी जी जरूर उस बात को मेरी नोटिस में ले आए हैं। लेकिन वह कहीं नीचे से अब कंट्रोल नहीं किया जाता है। वह किसी इंस्टुमेंट के चलते – यह जो एक्सीडेंट या जो भी आप कह रहे हैं- वह एवाइड हुआ है।

किसी माननीय सदस्य ने ओटिस कंपनी के बारे में पूछा हैं। यह 1986 से लगी हैं। ट्रेडीशन हैं कि कांट्रेक्ट बेसिस पर हर साल इनका कांट्रेक्ट होता हैं और अंतिम जो ओटिस का चेक अप था वह 25-1-1999 में हुआ ....(**व्यवधान**).... आई एम सारी, 25 नवम्बर को हुआ। यह थोड़ा मैं मिस कर गया। रामूवालिया जी ने क्लोज सरकिट वाला कहा। यह क्लोज सरकिट लगा हुआ हैं। लेकिन जो तकलीफ इन्होने बतायी, मैं पूरी तरह से इनकी बात से मुतमईन हूं। मैं यह मानता हूं कि बाहर से जो लोग आते हैं वे मुसलमान और हिंदू ही नहीं, गरीब लोग भी आते हैं। वे चाहे जिस तरह के लोग हों, जब मैं इस घटना के बाद एयरपोर्ट पर पहुंचा तो सारी बात देखने के बाद ज्योत्सना की मां से जब मिलने गया तो उन्होने कहा कि भाई आप मिलने काहे के लिए आए हैं। वह मुझको नहीं जानती थी। लेकिन सारी बात कहते-कहते गुस्सा था उस महिला को, उस मां के दो बच्चे चले गए थे, तीन साल की पहले एक बच्ची चली गयी थी इसके बाद यह हादसा हो गया और उसके सामने हुआ, उसकी आंखों के सामने हुआ। लोगों ने कहा कि भाई बहुत विचलित हालत में है। मैंने कहा कि नहीं, मैं जरूर उनसे मिलूंगा। मैं मिला तो मैंने देखा कि वे होशो-हवास में थी। उन्होने एक बात बड़ी जोरादार कहीं जो रामूवालिया जी भी कह रहे थे। उन्होने कहा कि जब हम कस्टम पर जाते हैं तो कस्टम वाले, पुलिस वाले हमारे बैग के साथ – जैसे आदमी को नहीं देखते, बैग को देखते हुए हमारे साथ आते हैं और हमारे छू जाते हैं। उसमें एक एक चीज देखते हैं। लेकिन जब वहां बच्ची की जान जा रही थी तो वहां कोई भी निगाह लगाए नहीं था। मैं मानता हूं। रामूवालिया जी ने यह जो टी0वी0 हैं, क्लोज सरकिट हैं, वीडियों सरकिट हैं उसके बारे में कहा। वह लगाने का काम निश्चित रूप से किया जाएगा। एक और बात जरूर किसी माननीय सदस्य ने कही। तो जो आपने कहा उस सिस्टम को तरीके से और कैसे बेहतर हो या किया जाएगा। अब लगाने वाले भी खाने लगें? हमारी अजीब हालत हैं यानी

जिसके हाथ में दे दिया वही से कुछ मिल जाए, फिर वही कुछ काम करने लगे? तो इसमें ऐसा इंतजाम किया जाएगा—आपसे भी चर्चा की जाएगी कि इसमें कोई गड़बड़ी नहीं हो पाए। ऐसी कोशिश करेंगे। जो आपका सुझाव हैं वह मानने लायक सुझाव हैं। किसी माननीय सदस्य ने मुझे नाम याद नहीं हैं—कहा कि इंदिरा गांधी अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर कस्टम के लोग हैं, पुलिस के लोग हैं, "रा" के लोग है इंटेलीजेंस के लोग हैं। एक बड़ी जगह हैं और कई विभागों का यहां अमलगमेशन हैं और उन सबको कंट्रोल करना, एयरपोर्ट अथारिटी आफ इंडिया के हाथ में कुछ चीजें हैं और कुछ चीजें नहीं हैं। मैं मानता हूं कि यह हादसा जो हुआ हैं यह दुखदायी हैं। उसके लिए हमने अपने जो तीन आफिसर्स हैं जो उस समय ड्यूटी पर थे। और इंक्वायरी कमेटी में जो बात आई हैं, उस सब को देखकर, कल जब मैं शाम को सदन में आया था तो मैं तीन आदमियों को पनिश कर के ही आया था। महोदय, मैं यह बताने वाला था कि मैं ने जो अभाव देखा, जो दिक्कत देखी, उस में जिन जिन आदमियों का लैप्स है, जिन्होने भी गलती की हैं, उन को मैं सजा देकर ही सदन में आया था। लेकिन उस समय सब लोग थक गए थे और मुझे कहा कि बयान को रख दो और उस बयान में जो सुबह छपा था, यह बता नहीं थी। इसलिए मैं आप से कहना चाहता हूं कि जो एअरपोर्ट्स हैं खासकर जितने भी अंतर्राष्ट्रीय एअरपोर्ट्स हैं, उन मे यह समस्या हैं और निश्चित तौर पर हम इस समस्या का प्रधान मंत्री जी या अपनी सरकार के सभी साथियों से मिलकर कोई रास्ता निकालेंगे जो कि ठीक और दुरूस्त हो। महोदय, वहां कोई ऐसी अथॉरिटी होनी चाहिए जो कि इन सारे लोगों को कोऑर्डिनेट करने वाली हो और जिस के आदेश से लोग ठीक से चल पाएं।

महोदय, पुलिस के जवान के बारे में जो बात कही गयी, वह ठीक नहीं हैं। बागडोदिया जी कह रहे थे कि वह बैठे रहते हैं। महोदय, वह कभी बैठे रहते हैं, कभी नहीं बैठे रहते हैं और उस समय तो वह बिल्कुल ही वहां नहीं थे। उस समय वहां डिपार्टमेंट का कोई आदमी आसपास नहीं था, ऐसा रिपोर्ट में आया हैं और मैं, जो रिपोर्ट आई हैं, उस को पूरी तरह से मुकम्मल नहीं मान रहा हूं। जो बात आप ने कही है, मैं उसको मानता हूं। एअरपोर्ट अथॉरिटी ने वह इंक्वायरी कमेटी कांस्टीट्यूट की हैं यानी वह हमारे ही ऑफिसर हैं, एअरपोर्ट अथॉरिटी के ऑफिसर हैं, एअरपोर्ट अथॉरिटी के ऑफिसर हैं। तो उस रिपोर्ट को मैं पूरी तरह से नहीं मान रहा हूं, लेकिन उस रिपोर्ट की पूरी बात को भी गलत नहीं मानता। उस में कुछ बाते तथ्य सहित हैं, ठीक और दुरूस्त भी है।

महोदय, निश्चित तौर पर वहां जब यह हादसा हुआ तो उस में एक 7 वर्ष की बच्ची तो पिसकर दब गयी और 4 लोग घायल हैं। उन मे मिसेज नागपाल को हम ने अपनी एअरपोर्ट

अथॉरिटी की एम्बुलेंस में पहुंचाया। उपसभाध्यक्ष महोदय, निश्चित तौर पर लोकशाही और लोकतंत्र में आज जितनी ट्रांसपेरेंसी आ गयी हैं उतनी हमारे अफसरों में नहीं हैं। वह ऑफिसर अगर अखबार वालों को आने-जाने देते और बातों का ठीक तरह से पता लगाने देते तो मैं समझता कि इस तरह की गलतफहमियां इतने बड़े पैमाने पर होती हैं।

महोदय, बागडोदिया जी ने कहा कि जो समय दिया हैं, उस को मैं चेक कर लूं। जो रिपोर्ट में बात आई हैं, सुबह के 2.52 पर यह हादसा हुआ और मेरे स्टेट मिनिस्टर जैसे ही उन को 10 बजे पता चला, मुझ से पहले पहुंच गए। मुझ को 10.15 पर पता चला और 15-20 मिनिट में मैं भी वहां पहुंच गया।

श्री संतोष बागडोदिया : सुबह?

श्री शरद यादव : सुबह।

श्री संतोष बागडोदिया : पूरी रात आप लोगों को खबर नहीं दी गयी? ....(**व्यवधान**)... सर, कितने दुख की बात हैं कि सुबह 2.52 पर हादसा हुआ और दोनों मंत्रियों को खबर नहीं हुई। देश सो रहा था, आप तो दिल्ली में ही 7 घंटे बाद खबर मिली।

श्री शरद यादव : आप मेरी बात को सुन लें ....(**व्यवधान**)... आप ने कुछ सवाल खड़े किए, उन का जवाब सुन लें ....(**व्यवधान**)...

श्री संतोष बागडोदिया : वह ठीक है, लेकिन आप ने जो बात कही वह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, इसलिए मैं रिएक्ट कर रहा हूं। ....(**व्यवधान**)...

श्री संजय निरूपम : दिल्ली में दुर्घटना घटी और 7 घंटे बाद माननीय मंत्री जी को यह जानकारी मिली ....(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please allow him. *(Interruptions)* Sanjayji, please take your seat He is giving the explanation. *(Interruptions)* Whosoever is responsible for not communicating to him will...*(Interruptions)*

श्री संजय निरूपम : महोदय, यह बहुत ही खतरनाक बात हैं, बहुत ही खतरनाक बात हैं। महोदय, 3 बजे दुर्घटना घटती हैं, उस के 7 घंटे बाद दिल्ली में मंत्री जी को जानकारी होती हैं। ....(**व्यवधान**)...

श्री शरद यादव : महोदय, सदस्यगण समय की खींचतान में हैं ....(**व्यवधान**)... मैं आप से कह रहा हूं कि ....(**व्यवधान**)...

श्री संजय निरूपम : हम आप की ही बात कर रहे हैं। दिस इज टू मच। तीन बजे दुर्घटना घटी और 7 घंटे बाद इन को इनफॉर्मेशन मिलती हैं। ....(**व्यवधान**)...

श्री शरद यादव : आप ने जो बात कही, वह ठीक बात कही। मैं आप को इतना ही बता रहा हूं, आप पूरी बात सुन लेंगे तो मैं समझता हूं कि आप को कोई शंका नहीं रहेगी। लेकिन हर बात पर, अगर आप एक-एक चीज पूछेंगे तो फिर मैं पूरी बात नहीं रख पाऊंगा। जो आपने पूछा हैं, मैं चाहता हूं कि सारे सवालों का जवाब आपको ठीक ठीक दे सकूं। जो सुबह सिपाही वाली बात आपने कही, वहां जो हादसा हुआ, उपसभाध्यक्ष जी, वह 28 मिनट में हो गया और एअरपोर्ट अथोरिटी के लोग ही नहीं, वहां और लोग भी थे, जो घायल हैं उनके परिवार के लोग भी थे। सब तरह से पता लगाया गया, उसमें समय का वेरीएशन हैं। इन्क्वायरी में जो आया हैं, उसके अनुसार 2-52 पर यह हादसा हुआ। जो श्रीमती नागपाल हैं उनको पैर में अधिक चोट लगी थी। उनको हमारे एअरपोर्ट अथोरिटी के लोगों ने अपोलो हास्पीटल अपनी एम्बुलेन्स में पहुंचाया और अपने पैसे, अपनी देखरेख में उनका इलाज करवाया। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि जो काम गड़बड़ी के हुए उनको ठीक तौर पर हमने सामने लाना हैं,उनको सजा देना हैं, लेकिन जो काम दुरूस्त हुए या ठीक हुए, उस पर हमको शंका नहीं करना चाहिए। हमको तो इंसाफ की नजर सामने रखकर समस्या का निदान करना हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, निश्चित तौर पर व्यवस्था तो बिगड़ी हुई हैं, लेकिन यह जो दुर्घटना हैं वह मशीन की फेल्योर हैं। आपने यह जो एक बात कही, मैं इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर जब गया तो देखा कि वह एस्केलेटर इतना सिकुडा हैं, खासतौर से जो लोग अरब से आते हैं कमा कर, जो अपना सामान लाते होंगे, अगर वह फंस जाए तो एस्केलेटर अगर खराब नहीं होगा तो भी खराब हो सकता हैं, स्टेम्पिंग हो सकती हैं। जो आपने सुझाव दिया है, उपसभाध्यक्ष जी, निश्चित तौर पर उस सुझाव को मानने का काम करने का काम भी करेंगे और एक आफीसर वहां बैठने का काम भी करेंगे, जो स्विच बंद करने का काम देखेगा क्योंकि जब हादसा हो गया, लोग फंस गए तो यह बात सामने आ रही हैं कि स्विच के बारे में लोग नहीं जानते थे। जैसा यहां कहा गया कि चूंकि रात का समय था वहां किसी अफसर की ड्यूटी मशीन पर नहीं थी। मैंने तत्काल वहां कहा कि एक आदमी की ड्यूटी लगातार यहां रहेगी। जहां तक सामान की बात कहीं गई, सामान की ऐसी व्यवस्था जरूर की जाए, जिससे लोगों को, दूसरे यात्रियों को असुविधा न हो और इस तरह की हादसा न हो, जैसा यह हादसा हुआ हैं और जैसा कहा जा रहा हैं कि जो स्ट्रेप हैं वह दो एस्केलेटर के बीच आने के बाद ऊपर उठ गया, तो जो यह बात कही जा रही हैं और जो जांच में आ रही

है, निश्चित तौर पर इस पर ध्यान देंगे। ....(**व्यवधान**)...

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM : Sir, only a small clariflcation. I would like to know from the hon. Minister whether in future the Government is going to station a person on its behalf, or whether a person from the OTIS company will be put there for meeting any eventuality.

श्री शरद यादव : जी, आप शायद सुन नहीं पाए। मैंने कहा ओटिस कंपनी से हमारा कांट्रेक्ट है, वह इसमें सुधार करके गए थे। इसके बाद जो इन्क्वायरी कमेटी हैं, उसकी रिपोर्ट में यह कहा गया हैं कि एक बोल्ट जो हैं वह ढीला था।

श्रीमती कमला सिन्हा :मंत्री जी, इनका कहना यह हैं कि आपने जो कहा हैं कि हम आदमी रखेंगे, जिससे इस तरह का हादसा होने की संभावना न हो और वह आदमी स्विच ऑफ करेगा, स्विच ओन करेगा उस मशीन का, तो इनका पूछना हैं कि वह आदमी ओटिस कंपनी का होगा या एअरपोर्ट अथोरिटी का?

श्री शरद यादव : वह उनकी बात मैं समझ गया हूं। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि वहां एक आदमी रहेगा। अब वह आदमी कौन हो, इसका फैसला सोच-विचार कर किया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा और यह मैं निश्चित तौर पर कह रहा हूं। इन्होने जो बात कही है, वह मेरे दिमाग में हैं, एक आदमी वहां जरूर रखा जाएगा, अब जिसको भी रखा जाएगा, अब जिसको भी रखा जाएगा, हमारा रख जाएगा या उनका रखा जाएगा। अभी तो उनके साथ जो कांट्रेक्ट हैं, वह मशीन को सुधारते हैं। इसी के साथ हमने देश भर में सब जगह आदेश दे दिए हैं, अपने विभाग के लोगों से कहा है कि जहां ओटिस कंपनी के एस्केलेटर लगे हुए हें उनकी सब जगह जांच हो जाए और यदि कोई फाल्ट हो या पुरानी हों तो उनको तत्काल ठीक करने का काम करें। उपसभाध्यक्ष जी, मैं मानता हूं कि इसमें जो तत्परता से काम होना चाहिए था, वह नहीं हुआ और जो हादसा हुआ, उस हादसे के समय हमारी एयरपोर्ट अथारिटी का कोई अधिकारी वहां नहीं था, वहां फोन खराब था और वहां जो इंजीनियर है, जिसको कि वहां के मेकेनिज्म को देखने के लिए रखा गया था तथा जो मैनेजर था, जिसकी ड्यूटी थी, हमने तत्काल बाद हमने यह काम किया, पहले इन तीनों को सस्पेंड किया। मैं सदन को बताना चाहता हूं, हो सकता हैं इनका कोई दोष न हो क्योंकि यह जो कमेटी की रिपोर्ट आई हैं, मैं यह नहीं मानता कि यह पूरी तरह से मुकम्मिल हैं। बागड़ोदिया जी ने जो कहा कि एयरपोर्ट अथारिटी के चलते यह चूक हुई हैं ....(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश पचौरी : माननीय उपसाध्यक्ष जी, मैं माननीय मंत्री जी के उत्तर से जो

समझ पाया हूं, वह यह हैं कि चूंकि यह दुर्घटना और यह मामला एयरपोर्ट अथारिटी आफ इंडिया से संबद्व मामला हैं और इसकी जांच का कार्य उन्ही अधिकारियों को सौंपा गया जो एयरपोर्ट अथारिटी आफ इंडिया के थे। अब जो मैं माननीय मंत्री जी के उत्तर से समझ पाया हूं, वह यह हैं कि वे भी इससे सहमत नहीं कि इसकी जांच का काम उनको सौंपे जाने के पीछे कोई सही औचित्य हैं। ईश्वर न करे ऐसी दुर्घटना दोबारा हो, लेकिन भविष्य में अगर कभी ऐसी स्थिति हो जाए या ऐसी जांच कराने का दायित्व सौंपने की बात हो, तो क्या वे यह सुनिश्चित करेंगे कि जब कभी जांच उसी विभाग से संबंधित मामले की हो तो वे किन्ही और अधिकारियों को इस प्रकार की जांच की जिम्मेदारी सौपेंगे?

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, पचौरी साहब ने यह बात मुझसे कहीं थी, निश्चित तौर पर विभाग के लोगों ने जांच की हैं मगर मैं आपसे विनती यह करना चाहता हूं कि विभाग के लोगों ने जो जांच की हैं, मेरा आशय यह नहीं हैं कि वह जांच बिल्कुल दुरूस्त हैं या नहीं है, वह दुरूस्त हो भी सकती है, नहीं भी हो सकती हैं, लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जांच के पूरा होने के बाद, वहां की सारी स्थितियों को देखने के बाद, तमाम लोगों को पूछने के बाद, मीडिया में जो खबरे आई, उन सबको मिला-जुलाकर एक बढ़िया और बेहतर जांच, जो हम सब लोगों से वास्ता न रखे, कराने का काम किया जाएगा, जरूर किया जाएगा, यदि हमें इसे दुरूस्त करना हैं। जो आपने पूछा, वह ठीक सवाल पूछा था, हम निश्चित तौर पर इस जांच के बावजूद भी , यदि हमको लगा, महसूस हुआ, हम आपसे साफ-साफ, सदनीयत से कहना चाहते हैं कि एक ऐसी जांच जरूर बिठाएंगे जिससे कि ऐसी घटना आगे न घटे और इस घटना के लिए जो जिम्मेदार आदमी हैं, उस पर ठीक तरह से जिम्मेदारी लगाई जाए, ऐसा काम जरूर किया जाएगा।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं निश्चित तौर पर एक बात कहना चाहता हूं कि यह जो एक्सिडेंट हुआ, वह एक तरह से इंसान और मशीनी खराबी के कारण हुआ। यह जो कहा गया है कि वहां बैगेज के बारे में कुछ लिखा हुआ नहीं हैं, लिखा हुआ हैं, सारी चीजें लिखी हुई हैं कि कितना बड़ा बैग ले जाना चाहिए, कितना बड़ा नहीं ले जाना चाहिए, यह लिखा हुआ हैं लेकिन उस लिखे हुए को कोई पढ़ता नहीं हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूं कि माननीय सदस्यों ने जो बातें सदन में रखी हैं, जो चिंता व्यक्त की हैं, बहुत सी बातें आपने और भी कहीं जिनको मैंने नोट किया हैं। मै आपके माध्यम से सदन को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम सुधार के काम में लगे हैं, जो इसमें बिगाड़ हैं उसको हम सुधारने में लगे हैं और उसके लिए माननीय सदस्यों ने जो-जो सुझाव दिए, वे बहुत महत्वपूर्ण सुझाव हैं। एक सुझाव जो आपकी तरफ से आया हैं, उसी

दिन लोगों ने भी मुझे यह सुझाव दिया कि यदि वहां कोई आदमी होता जो बताता कि सामान या बैगेज कितना ले जाना चाहिए, कितना नहीं ले जाना चाहिए तो यह हादसा टल सकता था, एक अच्छा सुझाव हैं। तो मैं कहना चाहता हूं कि आप सब ने जो बाते सदन में कहीं है, उनका ध्यान रखा जाएगा और इसमें जिन लोगों की गलती रही हैं, उनको बख्शा नहीं जाएगा। उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से इतना विश्वास जरूर दिलाना चाहता हूं माननीय सदस्यों को कि जिस आदमी की भी इसमे गलती हैं, उसको बख्शा नहीं जाएगा।

श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया : सर, सभी विभागों की एक विभाग में एकाउंटेबिलिट देने की बात थी।

श्री शरद यादव : रामूवालिया जी ने जो कहा, वह निश्चित तौर से हमारे हाथ की बात नहीं हैं और निश्चित तौर पर वह एक जगह नहीं हैं। यानी एक अकेले एयरपोर्ट अथॉरिटी का यह काम हैं, ऐसा नहीं हैं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि वह कई जगहों पर हैं और कोऑर्डिनेशन का जो मामला हैं, वह बड़ा मामला हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : अंग्रेजी में उसको कहते हैं-bug stops here.

इस तरह उन्होने जो सुझाव दिया हैं, उसमें कोऑर्डिनेशन कैसे कर सकते हैं, यह कोशिश हम करेंगे लेकिन जो-जो सुझाव आए हैं और जो हमसे हो सका हैं, मैं मानता हूं उपसभाध्यक्ष जी कि पैसे से चीजे नहीं तोली जाती है। मैं इस बात को मानता हूं लेकिन इतना तो मानना पड़ेगा कि इस घटना का जब से हमें पता चला हैं तब से हमारे विभाग ने, हमारे कर्मचारियों ने , हमारे स्टेट मिनिस्टर ने और हमने तीन दिन से इस सवाल के सिवाय किसी दूसरे सवाल का पीछा नहीं किया और पीछा इसलिए नहीं किया कि सिर्फ इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा ठीक हो जाए बल्कि देश भर में कहीं इस तरह की दुर्घटनाएं न हों। तो उपसभाध्यक्ष जी, इन सारी चीजों पर जो लोगों ने मोटे-मोटे सवाल पूछे थे, उनका मैने जवाब दे दिया हैं। मैं आपके माध्यम से सदन को यह विश्वास और यकीन दिलाना चाहता हूं कि इसी हवाई अड्डे को नहीं बल्कि बाकी जो हवाई अड्डे हैं, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं, उनको और बेहतर बनाया जाएगा, ठीक बनाया जाएगा, दुरूस्त बनाया जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस दुर्घटना को लेकर जो बदनामी हुई हैं, मैं इसको मानता हूं। इसलिए इसे सदन ने भी गंभीरता से लिया हैं, सदस्यों ने भी गंभीरता से लिया हैं और हमने भी गंभीरता से लिया हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, इन शब्दों के साथ मैं सदस्यों का शुक्रिया अदा करता हूं। उन्होने

बहुत सी बातें जो कही हैं उनका जवाब नहीं दे पाया हूं, रात हो गई हैं, फिर इस विषय पर बहस तो होती जा रहती हैं, यह बहस जारी रहेगी और सुधार का जो सिलसिला आपने कहा वह लगातार जारी रहेगा और आप सब लोगों का सहयोग और समर्थन हमें मिलता रहेगा, ऐसी मैं आशा करता हूं। मैं आप सबका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूं।

श्रीमती कमला सिन्हा : उपसभाध्यक्ष महोदय, यदि आपकी इजाजत हो तो मैं एक सवाल मंत्री जी से पूछूं?

उपसभाध्यक्ष (श्री आदिक शिरोडकर) : पूछिए।

श्रीमती कमला सिन्हा : महोदय, मैं मंत्री जी से केवल इतना ही पूछना चाहती हूं कि आपने सभी सदस्यों के विचार सुने, उनकी राय को भी सुना। आपने कहा कि विभागीय जांच होगी लेकिन आपके विभाग के कार्यकलापों पर कई सदस्यों ने प्रश्नचिन्ह लगाया हैं व मैं केवल इतना ही कहना चाहती हू कि इस मामले की जांच अगर आप ज्यूडीशियल इनक्वायरी के द्वारा कराएं तो हम लोगों को विश्वास होगा कि हां, यह उचित जांच है।

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, जांच का मैं वादा जरूर करता हूं लेकिन यहां ज्यूडीशियल होगी या कैसी होगी, यह मैं अभी नहीं कह सकता हूं लेकिन जो जांच होगी वह मुकम्मल होगी जो टुथ तक जाएगी, ऐसा मैं आपसे वादा करता हूं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned till 11 a.m. tomorrow morning.

The House then adjourned at four minutes past eight of the clock till eleven of the clock on Friday, the 17th December, 1999